स.श्रो.वि./एक.डी./91-85/28708--चूंकि हरियाणा के राज्याल को राये है कि मैं. विवेकातन्द श्राश्रमें, सैक्टर-26 र नजदीक सब्जी मण्डी, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमती शान्ति देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है,

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायित गंय हैतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के उपखण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्नेय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथना संबंधित मामला है :--

क्या श्रीमती शान्ति देवी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं.श्रो.वि./एक.डी./130-85/28715.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. त्रिपृति उद्योग प्रा.लि., 15 माईल स्टोन मथुरा रोड़, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री राम सुन्दर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है,

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करेना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिस्चना सं 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधिस्चना की ग्रीरा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायिनगय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम सुन्दर की सेवाग्रों की समापन न्यायोचित तथा ठीक है; यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.म्रो.वि./एफ.डी./106-85/28728 --चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. पिन पैक लि.म.न. 90, सैक्टर-15-ए, फरीदाबाद के श्रीमक श्री शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है,

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, श्रौद्यागिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीव्यस्त्वना स. 5415-3-श्रम 68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रीव्यस्त्वना स. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीव्यस्त्वना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:--

क्या श्री शंकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.म्रो.वि:/एफ़.डी./106-85/28735.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. पिन पैक लि म.न.-90, मैक्टर-

ग्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी, ग्रधिसूचना स. 5415-3-अम 68/15245, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना स. 11495-जी-श्रम 57/11245 दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 की अधीन गठित श्रम न्यायालय फिरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय कि लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री गोमती की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो.वि./एफ.डी./106-85/28742.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. पिन पैक लि., म.न. 90, सैक्टर 15-ए, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री राम जस तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है,

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-अम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 की ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मासंला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---.

क्या श्री राम जस की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.मो.वि./एफ.डी./106-85/28149.—चूंकि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. पिन पैक लि., म. नै.-90, सैक्टर-15 ए, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री सेदेव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है,

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिख्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15245, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 की ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित नामला है:—

क्या श्री सैदेव की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो.वि./ग्रम्बाला/69-85/28775.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. सैक्ट्री हरियाणा स्टेंट एग्रीकलचरल मार्किटिंग बोर्ड, सैक्टर-6, पंचकूला के श्रमिक श्री जगत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है:—

ग्रौर चूंकि हरियाणा कैं राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वीछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री जगत सिंह की सेवाग्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?